एआई के उपयोग से समाज का बदलता स्वरूप

श्रीमति दिव्या जैन, व्याख्याता, शिक्षा संकाय, गुरुनानक कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, उदयपुर

सारांश

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एक परिवर्तनकारी तकनीक है जो मशीनों में मानवीय बुद्धिमत्ता का अनुकरण करती है।

कृत्रिम बुद्धिमता वह तकनीक है जो मशीनों को मानव जैसी तर्क शक्ति और स्वायत्त निर्णय लेने जैसी क्षमताएं प्रदर्शित करने में सक्षम बनाती है।

"आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का आने वाला समय युद्ध का नहीं होगा बल्कि गहन करुणा अहिंसा और प्रेम का युग होगा।"

सन 1955 में जॉन मैकार्थी ने अधिकारिक तौर पर इस तकनीक को आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस का नाम दिया था। कृत्रिम बुद्धिमता का प्रभाव प्रौद्योगिकी से कहीं आगे तक फैला हुआ है जो निश्चित रूप से हमारे कार्य को विकसित करेगा। समाज में बदलाव का मतलब है कि समय के साथ साथ समाज के रीती रिवाज मान्यता और व्यवहार में बदलाव आना। समाज में बदलाव की वजह से ही समाज की सांस्कृतिक और सामाजिक संस्थाएँ बदलती रहती है। यह बदलाव समाज में एएआई के बारे में कई स्तरों पर महत्वपूर्ण चिंतन को प्रेरित करता है जिसमें जवाबदेही स्वायत्तता और विश्वास के बारे में सवाल शामिल हैं जब हम एआई और समाज के बीच की गतिशीलता पर विचार करते हैं तो यह स्पष्ट हो जाता है कि,एआइ भावनाओं का विश्लेषण कर सकता है ,और चेहरे के भावों को पहचान सकता है लेकिन यह भावनाओं को सही मायने में समझने या अनुभव नहीं कर सकता।यह सीमा इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि भावनात्मक बुद्धिमता व्यवसाय और जीवन में कईमहत्वपूर्ण निर्णयों को प्रभावित करता है ।मानवीय विशेषता हमारी ऐसी चीजों की कल्पना करने की क्षमता है जो कभी अस्तित्व में नहीं थी और उन्हें वास्तविकता में बदल देती है। जबकि एआई मौजूदा पैटर्न के आधार पर विविधताएँ उत्पन्न कर सकता है यह वास्तव में नए विचारों की कल्पना नहीं कर सकता है या उनके गहरे महत्वपूर्ण नहीं समझ सकता है नवाचार के लिए न केवल रचनात्मकता की आवश्यकता होती है बल्कि मानवीय जरूरतों इच्छाओं और समाज की सूक्ष्म बारीकियों को भी समझना आवश्यक है ऐसे गुण जो विशिष्ट रूप से मानवीय है।इंसानों की जगह लेने के बजाए एआई हमारे विकास के लिए सबसे शक्तिशाली उपकरण बन रहा है एआई एक सहायक के रूप में है जो नियमित कार्यों को संभाल सकता है और मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकता है लेकिन इससे अंततः अपने अनुप्रयोग को निर्देशित करने के लिये मानवीय ज्ञान की आवश्यकता होती है। यह साझेदारी हमें उस चीज पर ध्यान केंद्रित करने की अनुमति देती है जो हम सबसे अच्छा करते हैं। जिनके लिए विशिष्ट मानवीय क्षमताओं के आवश्यकता होती है। यह बदलाव नई भूमिकाएं और अवसर पैदा कर रही है जिनकी हम दशक पहले कल्पना भी नहीं कर सकते थे।यह साबित करता है कि तकनीकी उन्नति मानव कार्य को खत्म नहीं करती बल्कि इसे विकसित करती है।

इस नए युग में सफलता उन लोगों की है जो समझते हैं कि मानव और कृत्रिम बुद्धिमता दोनों का लाभ कैसे उठाया जाए। मुख्य बात एआई के साथ प्रतिस्पर्धा करना नहीं है बल्कि विशिष्ट मानवीय कौशल विकसित करना है जो इसे पूरक बनाते है जैसे जैसे हम तकनीकी रूप से आगे बढ़ते हैं हमारी मानवता जुड़ने बनाने और देखभाल करने की हमारी देखभाल करने की हमारी क्षमता कम नहीं बल्कि अधिक मूल्यवान होती जाती है। भविष्य में केवल एआई या मनुष्यों का ही प्रभुत्व नहीं होगा इसे वे लोग आकार देंगे जो दोनों को मिलाने की कला में माहिर हैं। प्रतिस्थापन के बजाय वृद्धि के लिए एक उपकरण के रूप में एआई को अपनाकर हम एक ऐसा भविष्य बना सकते हैं जो मानवीय क्षमताओं को कम करने की बजाए उसे बढ़ाएँ।